# कथा सरिता

## पुरुषार्थ ही सर्वोपरि

विंध्याचल प्रदेश के राजा के दरबार में तीन व्यापारी अपनी फरियाद लेकर उपस्थित हुए और बोले-''महाराज! हम आपके राज्य में व्यापार करने आ रहे थे कि हमें मार्ग में डाकुओं ने लूट लिया। हमारे पास लेशमात्र भी धन नहीं है। कृप्या हमारी मदद कीजिए।'' राजा ने उन तीनों को एक-एक बोरी गेहूँ देने का आदेश दिया। गेहूँ देते समय राजा बोले - ''इस बोरी के गेहूँ को स्वयं ही साफ करना और स्वयं ही उपयोग में लाना। न किसी को देना, न किसी की मदद लेना। एक माह बाद मुझसे पुन: मिलना।'' बोरी लेकर तीनों व्यापारी चले गए। उनमें से दो व्यापारी आलसी थे, तो उन्होंने गेहूँ साफ करने का श्रम न करते हुए उसे बेच दिया। तीसरा व्यापारी परिश्रमी था, उसने गेहूँ साफ करना शुरू किया तो उसे बोरी में नीचे एक अनगढ़ हीरा मिला। उसने उसे तराशकर अपने पास रख लिया। एक माह बाद तीनों व्यापारी राजा के समक्ष हाज़िर हुए तो आलसी व्यापारियों ने राजा से पुन: धन की मांग की, परंतु तीसरे व्यापारी ने तराशा हुआ हीरा राजा को भेंट किया। राजा बोले-''यह तुम्हारा ही है। इसे बेचकर नया कारोबार आरंभ करो।'' इसके बाद राजा दूसरे व्यापारियों से बोले - ''ऐसे ही रत्न तुम्हारी बोरियों में भी थे, परंतु श्रम का अनादर करने के कारण तुम उससे वंचित रह गए।'' सत्य यही है कि पुरुषार्थ के अभाव में मनुष्य दीन–हीन बना रहता है।

## जीवन जीने का मूलमंत्र

महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को उपदेश देते हुए कहा - '' देश में अकाल पड़ा है। लोग अन्न एवं वस्त्र के लिए तरस रहे हैं। उनकी सहायता करना हर मनुष्य का धर्म है। आप लोगों के शरीर पर जो वस्त्र हैं, उन्हें दान में दे दें।'' यह सुनकर अनेक लोग उठ गए, पर उन शिष्यों में से एक निरंजन वहीं बैठा रहा। उसने सोचा कि मेरे शरीर पर तो एक ही वस्त्र है। इसे दे दूंगा तो नग्न होना पड़ेगा। फिर उसने सोचा कि मनुष्य बिना वस्त्र के पैदा होता है और बिना वस्त्र के चला जाता है। यह सोचते ही उसने अपना उत्तरीय - धोती उतारकर महात्मा बुद्ध के चरणों में डाल दिया। महात्मा बुद्ध ने निरंजन से पूछा - '' पुत्र! तुम्हें अपने वस्त्र देने में कष्ट तो नहीं हुआ?'' निरंजन ने उत्तर दिया- ''महात्मन! थोड़ा कष्ट तो हुआ, पर देने के भाव से जो संतुष्टि मिली, उसने पहले जन्म लिए लोभ का संवरण कर लिया।''
महात्मा बुद्ध बोले- '' एक वस्त्र के त्याग ने तुम्हारे मन में संतुष्टि को जन्म दिया तो सोचो यदि सर्वस्व प्रभु को अर्पित कर दोगे तो कितनी गहन संतुष्टि जन्म लेगी।'' निरंजन को जीवन जीने का मूलमंत्र मिल गया था।

## परमात्म कृपा का सदुपयोग

एक राजा का जन्म दिन था । सुबह जब वह घूमने निकला तो उसने तय किया कि वह रास्ते में मिलने वाले सबसे पहले व्यक्ति को आज पूरी तरह से खुश व सन्तुष्ट करेगा।
उसे एक भिखारी मिला। भिखारी ने राजा से भीख मांगी तो राजा ने भिखारी की तरफ एक तांबे का सिक्का उछाल दिया। सिक्का भिखारी के हाथ सें छूट कर नाली में जा गिरा। भिखारी नाली में हाथ डालकर तांबे का सिक्का ढूंढ़ने लगा।
राजा ने उसे बुलाकर दूसरा तांबे का सिक्का दे दिया। भिखारी ने खुश होकर वह सिक्का अपनी जेब में रख लिया और वापिस जाकर नाली में गिरा सिक्का ढूंढ़ने लगा।
राजा को लगा कि भिखारी बहुत गरीब है। उसने भिखारी को फिर बुलाया और चांदी का एक सिक्का दिया। भिखारी ने राजा की जय-जयकार करते हुए चांदी का सिक्का रख लिया और फिर नाली में तांबे वाला सिक्का ढूंढ़ने लगा ।
राजा ने उसे फिर बुलाया और अब भिखारी को एक सोने का सिक्का दिया। भिखारी खुशी से झूम उठा और वापिस भागकर अपना हाथ नाली की तरफ बढ़ाने लगा।
राजा को बहुत बुरा लगा। उसे खुद से तय की गयी बात याद आ गयी कि 'पहले मिलने वाले व्यक्ति को आज खुश एवं सन्तुष्ट करना है।' उसने भिखारी को फिर से बुलाया और कहा कि मैं तुम्हें अपना आधा राज-पाट देता हूँ। अब तो खुश व सन्तुष्ट हो जाओ ।
भिखारी बोला - 'सरकार ! मैं तो खुश और संतुष्ट तभी हो सकूंगा, जब नाली में गिरा हुआ तांबे का सिक्का भी मुझे मिल जायेगा।'
हमारा हाल भी उस भिखारी जैसा ही है। हमें परमात्मा ने मानव रूपी अनमोल खज़ाना दिया है और हम उसे भूलकर संसार रूपी नाली में तांबे के सिक्के निकालने के लिए जीवन गंवाते जा रहे हैं ।
इस अनमोल मानव जीवन का हम सही इस्तेमाल करें तो हमारा जीवन धन्य हो जायेगा ।

## मान क्या और अपमान क्या!

स्वामी रामतीर्थ अमेरिका प्रव्रज्या हेतु पहुँचे हुए थे। उनका उद्बोधन प्रसिद्ध चिंतकों व विचारकों के मध्य हुआ तो सभी ने एक स्वर में उनके अद्भुत व्यक्तित्व एवं प्रकांड पांडित्य की प्रशंसा की। उद्बोधन के पश्चात् वे जिन महिला के घर रुके हुए थे, उनके घर पहुँचे तो उन महिला से बोले - ''बहन! आज ईश्वर ने इस नाचीज़ को अन्यथा ही बहुत प्रशंसा दिलवाई।'' कुछ दिनों उपरांत वे न्यूयॉर्क शहर के ब्रौंक्स क्षेत्र से गुज़र रहे थे कि वहाँ उनकी वेशभूषा को देखकर कुछ अराजक तत्वों की भीड़ लग गई। उनमें से कुछ उन पर छींटाकशी करने लगे तो कुछ ऐसे भी थे, जो अन्यथा ही उनके साथ दुर्व्यवहार करने लगे। घटना की खबर जब महिला को लगी तो वे कुछ साथियों को लेकर स्वामी जी को लेने पहुँचीं। रामतीर्थ उसी निर्विकार भाव से बोले - ''बहन! आप हस्तक्षेप न करो। आज ईश्वर का अपने इस भक्त को अपमान से भेंट कराने का मन है। भगवान के भक्त के लिए मान क्या और अपमान क्या?'' श्रीमद्भगवद्गीता में जिस स्थितप्रज्ञ का वर्णन है, उस स्वरूप का दर्शन उनमें सबको उन क्षणों में हुआ।

## शक्ति का प्रयोग विवेकसंगत

श्रुतायुध ने भगवान शिव की तपस्या करके उनसे ऐसी गदा प्राप्त की, जिसका प्रहार त्रिलोक में किसी के लिए सह पाना संभव नहीं था। गदा देते समय भगवान शिव ने श्रुतायुध को आगाह किया कि गदा का उपयोग मात्र सत्कार्यों में किया जा सकता है, यदि व्यक्तिगत राग-द्वेष की पूर्ति के लिए इसका उपयोग हुआ तो यही गदा उसकी मृत्यु का कारण बनेगी। महाभारत के युद्ध में श्रुतायुध को अर्जुन के सामने लड़ने आना पड़ा। श्री कृष्ण को श्रुतायुध की गदा के विषय में ज्ञात था और वे जानते थे कि यदि वह गदा चली तो अर्जुन उस प्रहार को झेल न सकेंगे। अत: श्रीकृष्ण श्रुतायुध को देखकर हँस पड़े। श्रुतायुध को लगा कि संभवतया श्रीकृष्ण उसे कुरूप समझकर उस पर हँस रहे हैं। क्रोध में वह अपना संयम खो बैठा और भगवान शिव की चेतावनी भूल गया। उसने वह गदा श्रीकृष्ण को लक्ष्य कर फेंकी, परंतु गदा ने लौटकर श्रुतायुध का ही वध कर दिया। शक्तियों का उपयोग विवेक-सम्मत तरीके से ही किया जाना चाहिए, अन्यथा दंड का भागी बनना पड़ता है।

**करनाल-हरियाणा।** पुलिस लाइन में 'नशामुक्ति सेमिनार' के पश्चात् सभी पुलिसकर्मियों को नशा न करने तथा औरों को भी नशे से दूर रखने की प्रेरणा देने की शपथ दिलाते हुए ब्र.कु. डॉ. सचिन परब। साथ हैं ब्र.कु. मेहरचन्द, इंस्पेक्टर रोशन लाल तथा अन्य।

**रादौर-हरियाणा।** विश्व जनसंख्या दिवस के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. राज बहन। साथ हैं ब्र.कु. राजू, भाजपा मंडल अध्यक्ष रवि मोदगिल, ब्लॉक मेम्बर विजय कुमार वर्मा, प्रदेश अध्यक्ष संदीप वर्मा तथा ब्र.कु. रमा।

**कोलकाता।** अंतर्राष्ट्रीय मादक मुक्ति दिवस के अवसर पर युनिवर्सल ट्रुथ वेलफेयर सोसायटी तथा बंगीय मिलन मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित किये जाने पर उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. किरण, ब्र.कु. पिंकी, वेलफेयर सोसायटी के संपादक मृनाल सरकार, मेडिकल बैंक के कर्णधार डी. आशीष तथा कमरहटी म्युनिसिपैलिटी के चेयरमैन गोपाल साह।

**समस्तीपुर-विहार।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव, डी.आर.एम. आर.के. जैन, सुधा डेयरी के एम.डी. डी.के. श्रीवास्तव, ब्र.कु. सविता, पूर्व योजना पदाधिकारी एस.के. वर्मा, कृष्ण भाई तथा अन्य।

**डिबरूगढ़-असम।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इंडिया क्लब,मारवाड़ी पट्टी में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं डॉ. रतन काटोकी,प्रिन्सीपल,असम मेडिकल कॉलेज,डिबरूगढ़, डॉ. महेश हेमाद्री,माउण्ट आबू, ब्र.कु. बिधान तथा अन्य।

**फरीदाबाद से.35।** समर कैम्प के समापन अवसर पर प्रतिभागी बच्चों को सर्टिफिकेट देने के पश्चात् समूह चित्र में निगम पार्षद जीतेन्द्र यादव, ब्र.कु. सपना, ब्र.कु. ईश्वर तथा अन्य।